# रामवृक्ष बेनीपुरी जी के साहित्य में नारी चित्रण

## हिंदी में पीएच.डी. उपाधि हेतु

## शोध प्रस्तावना


शोध निर्देशिका

डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन

शोधार्थी

आनंद कुमार

एनरोलमेंट नं.- JVR-I/21/5830



## मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

## ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर

## (राज.)2022

**प्राक्कथन**

रामवृक्ष बेनीपुरी यह नाम साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट शैली भाषा और रचनात्मकता के लिए जाना जाता है| यह शब्दों के चितेरे और कलम के जादूगर जैसी उपाधियों से विभूषित हिंदी रचना संसार के अप्रतिम रचनाकार हैं| उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर जिन विषयों को स्पर्श किया वह साहित्य विधा के अनमोल धरोहर बन गए| 'माटी की मूरतें' से उन्होंने हिंदी साहित्य में सोने की मूरतें गढ़ दी | इसके अलावा इनकी आत्मकथा, चिंतन परक निबंध, नाटकें, उपन्यास, कहानियाँ , यात्रा साहित्य तथा डायरी साहित्य ये सब साहित्य में उनकी कीर्ति के उज्ज्वल स्तंभ समान है।

साहित्य और अर्थ मीमांसा की दृष्टि से उनका रचना संसार आज की स्त्री से संबंधित विचार विमर्श के लिए बहुत ही

प्रासंगिक है। बेनीपुरी जी के जन्म का समय देश में संक्रमण काल था। गुलाम देश की जन आकांक्षाएँ अंगड़ाई ले रही थी। राजनीति, शिक्षा, साहित्य हर क्षेत्र में परिवर्तन की एक लहर सी उठी हुई थी। एक तरफ राजनीतिक मंच पर  युगांतर स्थापित करने वाले नेताओं का उदय हो रहा था तो वहीं साहित्य में, भाषा में, लेखन में सभी वर्जनाओं को रूढ़ियों को तोड़कर नई राह बनाने की पुरजोर कोशिश हो रही थी। वैसी ही परिस्थितियों में आधी आबादी के प्रश्न पर भी विचार होना लाजमी था। लेखकों, साहित्यिकों तथा सुधारकों के लिए यह प्रश्न उनके कार्यक्षेत्र में प्रमुखता से उभर कर सामने आया। ऐसे में बेनीपुरी जी ने भी अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से नारी के उत्थान यज्ञ में अपनी आहुति दी। बेनीपुरी जी के मन में नारी के प्रति असीम सहानुभूति और सराहना का भाव था। अपने जन्म क्षेत्र मिथिलांचल में नारियों की दशा को उन्होंने भली-भांति देखा था। नारियों की स्थितियों- परिस्थितियों में कालक्रम में जो गिरावट आती जा रही थी उसे लेकर वे अत्यंत चिंतित थे।
मिथिलांचल की समृद्ध धरा जहां एक समय में सीता, गार्गी और मैत्रेयी जैसी महान स्त्रियों का अभिर्भाव हुआ। जहाँ आम्रपाली जैसी ऐतिहासिक रूप से चर्चित नारियों ने जन्म लिया वहां की नारियों की दशा में निश्चय ही बदलाव होना चाहिए इस भाव से सदैव  उनकी रचनाशीलता अनुप्राणित रही। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने अपने विभिन्न स्त्री चरित्र के माध्यम से नारी पर हो रहे तमाम अत्याचारों की विशद झलक दिखलाई है। उन्होंने दिखाया है कि समाज में फैले अंधविश्वास, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि की सर्वाधिक शिकार स्त्रियां ही होती हैं। किस प्रकार स्त्रियों को सदैव आलंबन की आवश्यकता होती है। पिता,

पति, पुत्र अथवा किसी पुरुष के सहारे ही उनका जीवन यापन होता है जब कभी वह अकेले पड़ती हैं तब किस प्रकार समाज अपने विभत्स रूप में उसके सामने आ जाता है। 'नई नारी' जैसे निबंधों में उन्होंने इन्हीं तमाम विषमताओं को दूर करने का आह्वान करते हुए हुए कहा कि नारियों के प्रति जब तक हम अपनी धारणा में बदलाव नहीं करते तब तक राष्ट्र का विकास संभव नहीं क्योंकि हम उसी देश के रहने वाले लोग हैं जहाँ कहा गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता'। अभिप्राय यह है कि जब तक स्त्रियों की दशा में सुधार नहीं होगा तब तक राष्ट्र वैभवशाली नहीं हो सकता।

**शोधकार्य का महत्व:**

बेनीपुरी जी ने अपने समय के तमाम ज्वलंत मुद्दों तथा विशेषकर स्त्रियों की समस्याओं को अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप से को उभारा। नारी विमर्श एवं नारियों की चेतना में जागृति के प्रयास उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखाई पड़ते है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्रियों को उनके हर स्तर पर होने वाले संघर्षों में मजबूती से तथा डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा प्रदान करने का कार्य किया है। हर अत्याचार के खिलाफ खड़े होने का संबल दिया है। नारी विमर्श को एक नई ऊंचाई तथा नया आयाम दिया है।

**शोध कार्य की उपयोगिता:**

बेनीपुरी साहित्य में नारी अपने संपूर्ण रूप गुण तथा तथा शील के साथ उपस्थित है। नारी जो बाल्य काल से लेकर अपने वृद्धत्व तक समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का जिस निर्द्वंद् और निःस्वार्थ भाव से निर्वहन करती हैं उसका यहाँ बड़ा ही सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन है जो निश्चय ही हिंदी साहित्य में अनुपम और अनूठा है। बेनीपुरी जी के संपूर्ण साहित्य को लेकर अब तक नारी विमर्श पर केंद्रित कोई शोध कार्य संभवतः नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध इस अभाव की पूर्ति की दिशा में एक कोशिश है। बेनीपुरी साहित्य में नारी चरित्रों का चित्रण जिन-जिन रूपों में हुआ है तथा वे जिस परिस्थितियों का सामना करती है यह शोध प्रबंध उस दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

विवेचन और विश्लेषण की दृष्टि से शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में बांटा गया है।

प्रथम अध्याय बेनीपुरी जी के जीवनी को समर्पित है जिसमें उनके जन्म काल से मृत्यु तक के उनके जीवन संघर्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला जाएगा।

द्वितीय अध्याय में नारी चरित्रों की हिंदी साहित्य में विविध रूपों की विवेचना की जाएगी तथा नारी चित्रण की साहित्यिक विकास यात्रा को दर्शाया जाएगा साथ ही पाश्चात्य साहित्य में नारी चिंतन पर भी प्रकाश डाला जाएगा।

तृतीय अध्याय में बेनीपुरी जी के कथा, उपन्यास, रेखाचित्रों तथा निबंधों में नारी चरित्रों का सम्यक विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। चतुर्थ अध्याय में उनके नाटकों तथा अन्य विधाओं में

नारी सृष्टि का विवेचन किया जाएगा तथा  पांचवे एवं अंतिम अध्याय में बेनीपुरी साहित्य के ऐतिहासिक तथा समकालीन नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

**शोध-प्रबंध की रूपरेखा-**

ईश्वर प्रबंध में कुल 5 अध्याय होंगे शोध प्रबंध में अनावश्यक विस्तार के जगह सघन विश्लेषण का प्रयास किया जाएगा विषय वस्तु को प्रमाणिक तथ्यों व साक्ष्यों  के सहारे विवेचित व विश्लेषित किया जायेगा।

संभावित अध्याय निम्नवत हैं

- प्रथम अध्याय- साहित्य व नारी: स्वरूप -विवेचन
- द्वितीय अध्याय- रामवृक्ष बेनीपुरी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- तृतीय अध्याय- बेनीपुरी जी के कथा साहित्य, उपन्यास व निबंधों में नारी चित्रण
- चतुर्थ अध्याय-  बेनीपुरी जी के नाटकों व अन्य विधाओं में नारी चित्रण
- पंचम अध्याय: बेनीपुरी जी के साहित्य में ऐतिहासिक व समकालीन नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार

**संदर्भ ग्रंथ:**


- ❖ नई नारी — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- ❖ जंजीरे और दीवारें — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- ❖ पतितों के देश में — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- ❖ माटी की मुरतें — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- ❖ अम्बपाली — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

**आधार ग्रंथ:**


- रामवृक्ष बेनीपुरी रचना संचयन — साहित्य अकादमी,नई दिल्ली
- बेनीपुरी ग्रंथावली — राधाकृष्ण प्रकाशन,पटना
- हिंदी पत्रकारिता के शिखर पुरुष रामवृक्ष बेनीपुरी — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- वंदे वाणी विनयकौ — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- चार एकांकी — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- गेहूँ और गुलाब — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- अम्बपाली — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- नई नारी — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- जंजीरे और दीवारें — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- पतितों के देश में — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- माटी की मुरतें — प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली